amaan.cooldude18
राज
कॉमिक्स
विशेषांक
संख्या 81
इच्छाधारी
नागराज

shaan.cooldude18
नागराज की असाधारण शक्तियां कई हैं-
सर्प सेना
सर्प रस्सी
विष फुंकार
विषदंश
दीवारों पर चढ़ सकने की शक्ति
हजारों नागों की शारीरिक शक्ति
सम्मोहन शक्ति
इच्छाधारी शक्ति
और इन शक्तियों में सबसे शक्तिशाली है- इच्छाधारी शक्ति।
'इच्छाधारी' यानी इच्छा के अनुसार कोई भी रूप धारण कर सकने की शक्ति-
लेकिन नागराज ने इस इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग न करने की शपथ खाई है। और इस शपथ को उसने सिर्फ एक बार ही तोड़ा है। और वह भी अपनी रक्षा के लिए नहीं; बल्कि करोड़ों जिन्दगियों की रक्षा के लिए। ☆
परन्तु नागराज ने ऐसी शपथ क्यों ली?
आज इसी शपथ के कारण नागराज की जान जाएगी। क्योंकि अगर नागराज को अपने दुश्मन को हराना है तो उसे बनना ही पड़ेगा...
इच्छाधारी
कथा एवं चित्र: अनुपम सिन्हा
इंकिंग: विट्ठल कांबले
सुलेख एवं रंग: सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता

नागराज की शक्तियों के बारे में गुंडे और अपराधी तो अच्छी तरह से जानते हैं, लेकिन आम जनता को ज्यादा नहीं पता है-
इसीलिए 'भारती चैनल' ने नागराज के इंटरव्यू पर आधारित इस प्रोग्राम को बनाया है, जिसका सीधा प्रसारण हो रहा है-
... हां, भारती! मेरी कलाइयों से नागसेना भी निकलती है, और नागरस्सी भी। मैं इन दोनों शक्तियों का परिस्थितियों के अनुसार ही उपयोग करता हूं।...
... इसके अलावा मेरे पास कुछ मारक हथियार भी हैं। जैसे नागफनी सर्प, जो अधिकतर चीजों को काट सकते हैं। किसी की गर्दन को भी! ...
... मेरी विष फुंकार भी सभी जीवित प्राणियों के लिए काफी खतरनाक है। इसकी मात्रा को घटा-बढ़ाकर मैं किसी को बेहोश कर सकता हूं या मार भी सकता हूं।
वाऊ! इसके अलावा और कौन सी मारक शक्तियां हैं तुम्हारे अन्दर नागराज?
मेरा विषदंश भारती! यह मेरा सबसे खतरनाक हथियार है। अगर मैं किसी भी जीवित प्राणी को काटकर उसके शरीर में अपना विष पहुंचा दूं तो उसका शरीर गल जाएगा। ...
नागराज! यह तो नागराज है! इस प्रोग्राम का 'भारती चैनल' से सीधा प्रसारण हो रहा है। ...
... और 'भारती चैनल' का स्टूडियो यहीं महानगर में ही है। यानी नागराज महानगर में ही है। और मैं इतने दिनों तक राजनगर में उसको ढूंढ-ढूंढकर अपना समय खराब करता रहा।
इसके अलावा मेरे पास कुछ शक्तियां और हैं। ...

... जैसे हाथों को दीवार पर चिपकाकर, दीवार पर चढ़ सकने की शक्ति। इसके जरिए मैं छत पर भी चिपक सकता हूं।
और मेरी महाशक्ति है, सम्मोहन की शक्ति। इसके जरिए मैं किसी को भी सम्मोहित कर सकता हूं। अपने-आप को भी!
खुद को भी? वह कैसे?
अगर मैं शीशे में अपनी ही आंखों में आंखें डालकर अपने-आपको सम्मोहित करके कोई आदेश दूं तो मैं खुद अपने ही उस आदेश का पालन करने पर बाध्य होऊंगा।
आश्चर्यजनक बात है। लेकिन जहां तक मुझे पता चला है तुम्हारी एक शक्ति और है नागराज! एक महाशक्ति!
तुम्हारी इच्छाधारी शक्ति!
तुम अब उसका प्रयोग क्यों नहीं करते?
म... मैं अक्!
नागराज! क्या हुआ तुमको?
ट्रांसमिशन रोक दो! 'रुकावट' वाला स्पॉट लगा दो! जल्दी!
अचानक तबीयत खराब हो गई नागराज की। परवाह नहीं! अब तो मुझे नागराज का पता चल ही गया है। अब मैं इसको वहां पर बुलाऊंगा, जहां पर यह इच्छाधारी रूप रखने पर मजबूर हो जाए। पर अभी मैं इसके सामने नहीं आऊंगा। पहले चेक करूंगा कि इसके पास कोई नई शक्ति तो नहीं आ गई है।
ONIDA
VIDEO
SAMSUNG
उसको देख रही है, छुरिया? कैसा लगता है?
अच्छा शिकार है! चल इसको घेरकर पीछे गली में ले जाकर लूटते हैं!

चलो!
अगर तू चाहता है कि तेरी जान, तेरे बदन के पिंजरे के अंदर ही रहे तो चुपचाप हमारे साथ पीछे गली में आ जा!
और पीछे वाली गली में–
इसकी जेबें तो खाली हैं गोली!
तो इसका कोट-पैंट उतार ले!
दो-ढाई सौ में तो बिक ही जाएंगे!
वह तो मैं तुमको इनाम में दे दूंगा!...
...अगर तुम मेरी सूरत देख कर अपने पैरों पर खड़े रह पाओ...
...या मेरा असली रूप देखने के बाद अपने होशो-हवास कायम रख पाओ!
छुरिया! भाग!
भागोगे? हा हा हा!
सीथ्रू से बचकर कहां भागोगे?

दोनों गुंडे ज्यादा दूर तक भाग नहीं सके-
खशा
खशाक
और अपना काम करने के बाद-
वह प्राणी भी धूल-धूल होकर हवा में बिखर गया-
इन मच्छरों पर मुझे अपनी शक्ति व्यर्थ करने की जरूरत तो नहीं थी, लेकिन इतने दिनों बाद अपनी शक्ति आजमाने का मौका मैं छोड़ नहीं सका...
... अब समय आ गया है नागराज से वह शक्ति छीनने का, जो मुझे मेरा शरीर वापस दे सकती है। उसकी इच्छाधारी शक्ति!
और उसके लिए मैं ढूंढूंगा एक ऐसा हमलावर, जो नागराज को इच्छाधारी रूप में आने पर मजबूर कर दे!
और भारती चैनल के स्टूडियो में-
फिक्र मत करो भारती! अब मैं ठीक हूं!
लेकिन तुमको हुआ क्या था नागराज?
कुछ नहीं भारती!

लेकिन मुझे खेद है कि मेरी वजह से तुम्हारा 'फेस टू फेस' प्रोग्राम अधूरा रह गया।
उसको तो हम कल सुबह भी दिखा सकते हैं। अभी तुमको भी महानगर में अपनी रात की गश्त लगानी है।...
...और मुझको भी कल सुबह 'पुरानी नगरी' जाने की तैयारी करनी है।
पुरानी नगरी? यह कहां पर है?
ओह! मैं तो भूल ही जाती हूं कि महानगर में आए हुए अभी तुमको ज्यादा वक्त नहीं हुआ है।
महानगर की दक्षिणी सीमा से लगभग पांच किलोमीटर दूर पर एक बहुत बड़ा पथरीला इलाका है। चट्टानों से भरा हुआ...
...वहीं पर कुछ पुरातत्व-वेत्ताओं को लगभग तीन हजार साल पुराने एक प्राचीन नगरी के खंडहर मिले हैं। उसी को 'पुरानी नगरी' कहते हैं।
STU
4
हम उसी 'पुरानी नगरी' पर एक फिल्म बना रहे हैं। थोड़ी सी शूटिंग बाकी है, जो कल खत्म हो जाएगी।
ओह! यानी वह वीरान जगह अब अच्छी-खासी टूरिस्ट प्लेस बन गई है।
BHARTI
COMMUNICATION
नहीं, नहीं! वह जगह वीरान नहीं है। वहां पर दो-तीन कबीले रहते हैं! और चट्टानों के बीच में रहती है...
...विशालकाय प्रागैतिहासिक छिपकलियां। उन कबीले वालों ने उन छिपकलियों को पालतू बना लेने की कला सीख रखी है। वे अपना सारा भारी काम उनसे ही कराते हैं।
कमाल है। 'पुरानी नगरी' सुनने में काफी दिलचस्प लगती है। और खतरनाक भी।
दिलचस्प तो है, पर खतरनाक बिलकुल नहीं। वे कबीले वाले बहुत सीधे स्वभाव के हैं। और उनके साथ रहो तो छिपकलियों का भी डर नहीं होता।
पिछले दो सालों में हजारों लोग 'पुरानी नगरी' जा चुके हैं। लेकिन आज तक कोई दुर्घटना सुनने में नहीं आई।
ओ॰ के॰ भारती बेस्ट ऑफ लक।
कल सुबह मिलते हैं।
नाइट।
नागराज को अगली सुबह भारती से मिलना तो था। लेकिन

...बल्कि किसी दूसरी जगह पर-
क्योंकि अगली सुबह -
क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग
ओफ्! यह सुबह-सुबह राज को कौन याद कर रहा है?
यह फोन राज के लिए नहीं...
...बल्कि नागराज के लिए था-
हेलो... ओह?
नागराज! मैं भारती हूं। पुरानी नगरी से अपने मोबाइल फोन पर बोल रही हूं।
क्या हुआ भारती?
हमको कुछ कबीले वालों ने बंधक बना लिया है। और...और हमसे तुमको बुलाने को कहा है।
मुझे? वे मेरे बारे में कैसे जान गए?
पता नहीं! हम एक ऊंची चट्टान के ऊपर हैं। हमारी जीप ठीक चट्टान के बगल में खड़ी है।
तुमको उसी से हमारा पता...
बस! खेल खत्म!
भारती! भारती!
नागराज ने पुरानी नगरी की तरफ रवाना होने में पल भी व्यर्थ नहीं किया-
भारती मुसीबत में है! मुझे तुरन्त पुरानी नगरी पहुंचना होगा। लेकिन रास्ते में मुझे पुलिस को सूचित करते हुए जाना चाहिए। शायद कबीले वालों के खिलाफ मुझे उनकी मदद की जरूरत पड़ जाए।

नागराज, पुलिस को सूचित करता हुआ, शीघ्र ही पुरानी नगरी पहुंच गया -
पुरानी नगरी तो यही लगती है। अब उस ऊंची चट्टान की तलाश की जाए, जिसके पास 'भारती कम्यूनिकेशन' की जीप खड़ी है।
यह रही वह चट्टान! ओह! यह तो अद्भुत चट्टान है। इस पर तो चढ़ पाना असंभव है...
... इस पर वे कबीले वाले भारती को लेकर चढ़े कैसे होंगे? खैर अच्छा हुआ कि भारती ने पुलिस के बजाए मुझे बुलाया। क्योंकि मेरे लिए इस चट्टान पर चुपचाप ऊपर चढ़ना बाएं हाथ का काम है।
दीवारों पर हाथ जमाकर चढ़ लेने वाला नागराज, चट्टान पर चिपककर ऊपर चढ़ने लगा-
और इससे पहले कि आदिवासियों को भनक भी लग पाती...
...नागराज उन पर टूट पड़ा था-
धड़ाक
?

कबीले वालों ने जवाबी हमला तो जरूर किया-
लेकिन वे हमले नागराज पर बेअसर थे-
धाड़.
लेकिन नागराज के वार, आदिवासियों को चित करने के लिए काफी थे-
कुछ ही देर में सारे पहरेदार बेहोश पड़े हुए थे-
नागराज!
भारती! तुम तो कहती थी कि ये कबीले वाले बड़े भले हैं। फिर इन लोगों ने तुमको बंधक क्यों बनाया?
ये कह रहे थे कि इनको 'देवता' ने कहा है कि हमको पकड़कर नागराज को बुलाओ।
देवता ने? कैसा देवता?
देवता, जिसका सिर्फ सिर दिखता है। आदमी की खोपड़ी जैसा सिर।
'देवता' का हुलिया सुनते ही नागराज की आंखें सिकुड़ गई-
सिर्फ सिर वाला देवता? ओह! पर ये आदिवासी और तुम लोग ऊपर कैसे चढ़े? इस चट्टान पर तो चढ़ पाना असंभव काम है।
हमारे लिए होगा नागराज! लेकिन उन प्रौतिहासिक छिपकलियों के लिए नहीं, जो इन चट्टानों के ऊपर ही रहती हैं। ये कबीले वाले उन छिपकलियों को सधा सकते हैं।
ये आदिवासी हमको एक ऐसी ही छिपकली के ऊपर बैठाकर यहां तक लाए हैं।
ओह! वह छिपकली इस वक्त कहां है?

छिपकली यहां पर है नागराज ! ...
... लेकिन थोड़ी देर बाद तुम यहां पर दिखाई नहीं पड़ोगे !
हे देव कालजयी ! यह तो 'हार्नड टोड' है। एक खतरनाक छिपकली। और साथ-ही साथ यह विशालकाय भी है। ...
... और यह मुझ पर ही हमला करने आ रही है।
भारती, पीछे हो जाओ मैं इससे निबटता हूं

ये एक ट्रेंड छिपकली है! यानी अगर इसके ट्रेनर को मैं रास्ते से हटा दूं तो इस छिपकली को इशारा देने वाला कोई नहीं रह जाएगा!
तड़ड़ाक
पिऊंऊं
अब ये छिपकली.. ओह!
इस पर तो ट्रेनर के बेहोश होने का कोई असर नहीं हुआ। शायद इसको मुझ पर हमला करने के लिए पहले से ही ट्रेंड किया जा चुका है।
फूऊऊ
अब मुझे पलटकर इस पर हमला करना ही होगा।
मेरी विष फुंकार का इस पर कोई खास असर होता नहीं दिख रहा है। यह छिपकली खुद भी जहरीली होती है। इसलिए इस पर मेरे विष का असर, एक विषहीन प्राणी की तुलना में देर से होगा...
सर्प सेना का प्रयोग करना पड़ेगा।
... और तब तक इसका भारी पंजा मेरी खोपड़ी को तोड़कर मुझे यहां से तो क्या, इस दुनिया से ही रुखसत कर देगा।

जैसी उम्मीद थी मुझे, वैसा ही हुआ। मेरी नागसेना इसके कंटीले शरीर का सामना कर पाने में असमर्थ है...
... इसलिए अब मुझे भी सहारा लेना होगा...
... अपने कंटीले हथियारों का।
यानी नागफनी सर्पों का। जिनके कंटीले शरीर, इस छिपकली के शरीर को छलनी-छलनी कर देंगे।
लेकिन नागराज की यह उम्मीद भी पानी के बुलबुले की तरह तुरन्त खत्म हो गई-
नागफनी सर्प, 'हार्नड टोड' के शरीर पर हल्की खरोंचें डालने के अलावा और कुछ न कर पाए।
मेरी शक्तियां बहुत तेजी से खत्म हो रही हैं। इस पर सम्मोहन शक्ति असरकारक साबित हो सकती है। लेकिन उसके लिए मुझे इसकी आंखों में कम से कम तीन-चार सेकेंड तक लगातार देखना होगा। और यह उतनी देर तक स्थिर खड़ा नहीं रहेगा।...
... अब मैं क्या करूं?
आखिरी उपाय इस्तेमाल करके देखता हूं। वैसे भी मेरे उस अस्त्र का वार कभी विफल नहीं होता... और वह अस्त्र है...

इस भीषण वार ने नागराज की चेतना को कुछ पलों के लिए छीन लिया-

ओह! नागराज! होश में आओ नागराज!

और नागराज का लगभग बेहोश शरीर पथरीली जमीन से टकराने के लिए तेजी से नीचे की तरफ गिरने लगा-

भारती की चीख से नागराज के होशोहवास कुछ हद तक वापस आए-

ओह! कुछ ही पल हैं मेरे जमीन से टकराने में!...

...लेकिन मैं जमीन से टकराऊंगा नहीं!
नागरस्सी ने चट्टान के उभार को कस लिया-
और नागराज, हवा में गोल घूमकर, वापस चट्टान पर आ टिका-
ओफ! सिर अभी भी दर्द से फटा जा रहा है। शायद अंदरूनी चोट लगी है। मैं इस वक्त इस छिपकली का मुकाबला करने की हालत में नहीं हूं।
लेकिन 'हॉर्नड टोड' के इस हमले ने मुझे इसको खत्म करने का रास्ता साफ दिखा दिया है। यह तरीका तो मुझे शुरू में ही इस्तेमाल में लाना चाहिए था।...
...क्योंकि अगर मैं चट्टान से नीचे गिर सकता हूं तो यह छिपकली भी नीचे गिर सकती है।
चिऊंऊं
आजा! आजा!
नागराज की ललकार सुनकर, छिपकली नागराज पर हमला करने के लिए आगे लपकी-
और उसी पल, नागरस्सी उसके अगले पैरों में आ फंसी-
और हॉर्नड टोड अपना संतुलन खोकर चट्टान से नीचे जा गिरा-

अपने विशालकाय शरीर के कारण यह नीचे गिरकर मरेगी तो नहीं, लेकिन इतनी घायल जरूर हो जाएगी कि दुबारा ऊपर चढ़कर हमको परेशान न कर सके।
तुमने हम सबको एक बहुत बड़े खतरे से बचा लिया, नागराज।
तुम लोगों को इस छिपकली से कोई खतरा नहीं था भारती! यह तो सिर्फ मुझ पर हमला करने... आह!
तुम्हारे सिर को क्या हुआ, नागराज? ओह याद आया! इस छिपकली ने तुम्हारे सिर पर वार किया था। लगता है तुमको जोर की चोट लगी है। हमको तुरन्त डॉक्टर के पास चलना चाहिए।
और गुफा के अन्दर- 'सी-थ्रू' का अदृश्य खून खौल रहा था-
नागराज ने बिना इच्छाधारी रूप धारण किए 'हॉर्नड् टोड' को पछाड़ दिया। लेकिन मैं इसको यहां से ऐसे ही नहीं जाने दूंगा...
...मैं इस पर अपनी शक्तियों का प्रयोग करूंगा। इसको इच्छाधारी रूप धारण करना ही पड़ेगा।
यह घरघराहट उस पुलिस हैलीकॉप्टर की थी, जो नागराज के पीछे-पीछे पुरानी नगरी तक आ गया था-
POLICE
अरे! ये... ये घरघराहट की आवाज कैसी है?
वाह! पुलिस हैलीकॉप्टर! इनको जरूर तुमने ही बुलाया होगा। अब हम डॉक्टर तक बहुत जल्दी पहुंच सकते हैं।

सी-थ्रू ने अपने-आपको फिलहाल संभाल लिया था-
पुलिस आ गई है। इनके सामने नागराज पर हमला करके मैं इस मामले को खाम-ख्वाह उलझाना नहीं चाहता।
नागराज को अब कहीं और पर घेरना होगा।
खैर, जहां इतने दिन इंतजार किया वहां एक दो दिन और सही...
और 'सी-थ्रू' के देखते-देखते, पुलिस हेलीकॉप्टर नागराज, भारती और उसके सहायक को लेकर महानगर की तरफ उड़ चला-
जहां पर नागराज को तुरन्त मिलना था, स्नेक पार्क के डायरेक्टर डॉक्टर करुनाकरन से। जिन्होंने नागराज के पूरे शरीर का विश्लेषण किया था-
मेरी कैट स्कैन मशीन तो तुम्हारे सिर के अन्दर लगी किसी चोट का पता नहीं लगा पा रही है।
और मेरे ख्याल से तुमको कोई अन्दरूनी चोट लगी भी नहीं है।

लेकिन फिर भी मैं चाहूंगा, कि तुम अपने सिर का चैकअप एक बार डॉक्टर कार्तिक से करा लो!
वे एक टॉप क्लास के 'ब्रेन स्पेशलिस्ट' हैं, और मेरे बहुत अच्छे मित्र भी हैं।

उन्होंने एक ऐसी मशीन का आविष्कार किया है। जो मस्तिष्क के अलग-अलग हिस्सों को बारीकी से चैक कर सकती है।...
इससे यह पता लग जाता है कि चोट का असर मस्तिष्क के किस भाग पर हुआ है।

कहानी … पृष्ठ …

मैं उनको फोन भी कर देता हूं। ये रहा उनका पता। तुम तुरन्त जाकर उनसे मिल सकते हो।
ठीक है, डॉक्टर करुणा करन! आप कहते हैं तो मैं जाकर उनसे मिल लेता हूं।
क्या हुआ डॉक्टर साहब? नागराज को ज्यादा चोट लगी है क्या?
नहीं मिस भारती! मुझे तो किसी चोट का कोई निशान नहीं मिला। फिर भी मैं इनको दूसरे डॉक्टर के पास भेज रहा हूं।
अच्छा? इस बारे में नागराज ने मुझे कुछ नहीं बताया। पर हुआ...
कल रात एक इंटरव्यू के दौरान बोलते-बोलते नागराज की आवाज भी बन्द हो गई थी डॉक्टर!
उसका कारण मुझे पता है डॉक्टर साहब। पर वह कारण मैं बता नहीं सकता। तुम चलो भारती! मैं डॉक्टर कार्तिक से मिलकर आता हूं।
नागराज को डॉक्टर कार्तिक के पास पहुंचने में ज्यादा वक्त नहीं लगा-
आओ, नागराज! मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था। अभी-अभी डॉक्टर करुनाकरन का फोन आया था मेरे पास।
जानता हूं। पता नहीं
क्टर करुनाकरन ने मुझे
ब्रेन स्पेशलिस्ट के पास
जने की जरूरत क्यों
मझी?
मैं एक न्यूरो-स्पेशलिस्ट डॉक्टर जरूर हूं नागराज! लेकिन उससे पहले मैं एक वैज्ञानिक हूं।
मैं आम डॉक्टरों की तरह क्लीनिक में बैठकर मरीजों को नहीं देखता बल्कि मैं मस्तिष्क के उपचार से संबंधित, नई-नई मशीनों के आविष्कार में व्यस्त रहता हूं।
मैंने ऐसी-ऐसी मशीनें ईजाद की हैं, जो किसी भी मस्तिष्क का बारीकी से निरीक्षण कर सकती हैं।
आओ! मैं सबसे पहले तुम्हारे मस्तिष्क के अलग-अलग भागों की जांच करके किसी चोट का पता लगाता हूं।

डॉक्टर कार्तिक ने नागराज का परीक्षण शुरू कर दिया-
चोट का निशान तो कहीं नजर नहीं आ रहा है...
...पर तुम्हारे मस्तिष्क की संरचना विलक्षण है नागराज! क्योंकि तुम्हारे मस्तिष्क में ऐसे कई भाग दिख रहे हैं, जो आम आदमी के मस्तिष्क में नहीं होते।
ये हिस्से जरूर तुम्हारी अतिमानवीय यानी 'सुपर ह्यूमन' पॉवरों को कंट्रोल करने वाले हिस्से हैं।
लेकिन... लेकिन यह क्या है? तुम्हारे सिर के चारों तरफ एक अदृश्य ऊर्जा का घेरा कैसा बना हुआ है?
मेरी इच्छाधारी शक्ति का सुरक्षा कवच होगा डॉक्टर कार्तिक!
जो मेरे सिर को किसी भी हमले या आघात से बचाए रखता है।
इच्छाधारी शक्ति! ये क्या होती है? खैर, अभी इसकी भी जांच कर लेता हूं।
ये 'औरा' यानी अदृश्य ऊर्जा का घेरा, तुम्हारे मस्तिष्क के इस भाग से आता हुआ लग रहा है। इस पर फोकस करता हूं।
डॉक्टर कार्तिक के कंप्यूटर-स्क्रीन पर घूमता हुआ 'कर्सर' नागराज के मस्तिष्क के उस हिस्से पर फिक्स हुआ...
FIXING
...और अगले ही पल-
अरे! अरे! मेरे 'स्कैनर मिरर' को यह 'बैक शॉक' कैसे लग रहा है? सारे सर्किट नष्ट हो रहे हैं। मशीन में धुआं भी निकल रहा है...
...करेंट को तुरन्त बन्द करना पड़ेगा!
डॉक्टर कार्तिक के फुर्ती से स्विच करने ने उनकी मशीन को पूरी त से नष्ट होने से बचा लिया-
कट

ओ माई गॉड! एक दो सेकेंड में लाखों का नुकसान हो गया। लेकिन यह 'बैक शॉक' मशीन में लगा कैसे?
आपने मेरी इच्छाधारी शक्ति के केन्द्र में घुसने की कोशिश की थी। और इच्छाधारी शक्ति ने इसका प्रतिरोध किया। इसीलिए आपकी मशीन को 'बैक शॉक' लग गया।
इच्छाधारी शक्ति? हां... कुछ... कुछ याद तो आ रहा है। मैंने कहीं पढ़ा था कि तुम्हारे पास रूप बदल सकने की कोई अद्भुत शक्ति है। लेकिन ज्यादा कुछ याद नहीं आ रहा है।
वैसे जरा समझाओ तो कि ये इच्छाधारी शक्ति वास्तव में है क्या बला?

इच्छाधारी शक्ति का अर्थ है इच्छा के अनुसार रूप धारण कर सकने की शक्ति। मैं सिर्फ सोचने मात्र से कोई भी रूप धारण कर सकता हूं। चाहूं तो हूबहू आपजैसा बन सकता हूं।...
वाह! यह तो कमाल की शक्ति है। सुनकर भी यकीन नहीं आ रहा। शायद देखकर यकीन आ जाए। जरा कोई इच्छाधारी रूप धरकर तो दिखाओ!
इस वक्त मैं सिर्फ एक ही ...च्छाधारी रूप धारण कर सकता हूं। ...र्प का रूप। और कोई रूप अगर ...हूं तो भी धारण नहीं कर सकता।
ऐसा क्यों? ऐसी क्या समस्या आ गई तुम्हारे साथ?

यह मैं आपको किसी भी तरह से नहीं बता सकता। अगर बोलकर बताने की कोशिश करूंगा तो मेरी आवाज बन्द हो जाएगी, लिखकर बताऊंगा तो हाथ कुछ लिख ही नहीं पाएंगे।
पर सोच तो सकते हो न? सोचने से तो तुमको कोई भी रोक नहीं सकता!
हां, डॉक्टर कार्तिक! सोचने पर कोई अवरोध नहीं है। परन्तु मेरे सोचने से आप क्या जान सकते हैं?
सब कुछ। आओ मेरे साथ!

ये देखो। मेरा एक और नायाब अविष्कार। इसको मैं 'थाट पैटरन रीडिंग मशीन' कहता हूं। यानी 'विचार सूचक मशीन'।...
... दरअसल हम अपने मस्तिष्क में जो कुछ भी सोचते हैं, वह 'विद्युत संकेत' के रूप में मस्तिष्क के एक भाग से दूसरे भाग में प्रेषित होता है। मेरी यह मशीन उन विद्युत संकेतों को पकड़कर एक खास कोडेड भाषा में बदल देती है। और फिर उस कोडेड भाषा को डिकोड यानी सरलीकृत करके जाना जा सकता है कि मस्तिष्क वास्तव में क्या सोच रहा था।
वाह! यानी मैं सिर्फ सारा घटनाक्रम सोचता चला जाऊं, तो यह मशीन उस घटनाक्रम को कहानी की तरह लिखती चली जाएगी?
बिल्कुल सही! ऐसा ही होगा।
तो फिर देर कि बात की? आ अपना काम शु कीजिए। मैं तैयार हूं।
मशीन को तैयार और सेट करने में ज्यादा वक्त नहीं लगा-
डॉक्टर कार्तिक ने 'हेड सेट' को नागराज के सिर पर फिटकर दिया। और नागराज ने वह अद्भुत घटनाक्रम सोचना शुरू कर दिया, जिसके कारण अब वह इच्छाधारी शक्ति का सिर्फ एक प्रतिशत ही प्रयोग कर सकता था-
कट कट कट
और उस घटनाक्रम के अलग-अलग सूत्रों को जोड़ने के बाद जो कहानी सामने आई, उसकी शुरुआत ही रोमांचकारी थी-

लगभग एक साल पहले की बात है। उस वक्त नागराज, राजनगर में ही रहता था-
और राजनगर में रहने वाले अपराधी, नागराज के नाम से ही बुरा काम न करने की कसम खा लेते थे। लेकिन राजनगर से बाहर आते ही हर कोई अपने आपको असुरक्षित महसूस करने लगता था-
अब हम राजनगर की सीमा से बाहर आ गए हैं। अब यहां से 'सरकारी वॉल्ट' तक का रास्ता काफी सुनसान रहता है। और हमारे पास 'अकाल राहत' कोष के लिए इकट्ठा किया गया तेरह किलो सोना और पैंसठ लाख रुपए हैं। पता नहीं वॉल्ट तक ये सारा माल हम सुरक्षित पहुंचा पाएंगे या नहीं।
शहर सीमा समाप्त
जब मुंह खोलेगा, तो अपशकुनी वाली बात ही बोलेगा। अरे, माल सही जगह तक क्यों नहीं पहुंचेगा?
एक तो किसी को पता नहीं है कि ये माल इस वक्त हम इस रास्ते से ले जा रहे हैं।...
... और दूसरे हमारे साथ इतनी सिक्योरिटी है कि कोई आंख उठाकर देखने से पहले अपनी आंखें फोड़ लेगा।
ताड़.
भड़ाक
धड़ाक
राजन, सिक्योरिटी वाले कहीं नजर क्यों नहीं आ रहे हैं?
साइड व्यू मिरर से नजर हटाकर अगर ड्राइवर सामने ध्यान से देखता...
... तो उसको पता चल जाता कि सिक्योरिटी गार्ड्स नजर क्यों नहीं आ रहे थे-
तड़.
एक झटके से वैन कई पलटनी खाती चली गई-

बेहोश होने से पहले दोनों गार्ड्स उस बला की शक्ल तक नहीं देख पाए-
जिसने वैन को पलटने के बाद, उसके स्ट्रांग बॉक्स को, टीन के डिब्बे की तरह खोल दिया-
घड़ाक
परन्तु सुरक्षा-व्यवस्था की आखिरी कड़ी अभी बाकी थी-
तााड़
आतंकवाद का दुश्मन, नागराज वैन के अन्दर ही मौजूद
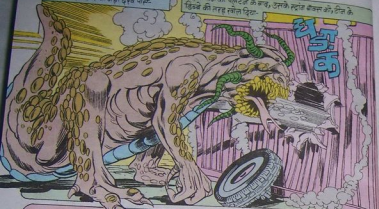
मुझे ये तो आभास था कि लुटेरे इस वैन पर हमला कर सकते हैं। इसीलिए मैं इस वैन के साथ-साथ आया था। लेकिन मुझे यह ख्याल, सपने में भी नहीं आया था कि लुटेरा ऐसा भी हो सकता है।
नागराज ने उस प्राणी को नाग-बंधनों में जकड़ने की कोशिश की-
लेकिन वे सारे नाग आरी जैसे तेज दांतों की बलि चढ़ गए-
कच कच
कच कच
यह प्राणी खतरनाक भी है, और फुर्तीला भी। इसको अपने पर हमला करने का मौका देना, आत्महत्या करने जैसा होगा। मैं इस पर अपनी विष फुंकार की भारी मात्रा का प्रयोग करता हूं। जो किसी भी जीवित प्राणी को एक सेकेंड से भी कम समय में बेहोश कर सकती है।

...और उसके बाद में इसको भेजने वाले को... आह!
इसने तो मेरी विष फुंकार पर ध्यान तक नहीं दिया। पर यह कैसे संभव है?
ऐसा तो सिर्फ तभी संभव है जब या तो यह प्राणी सांस न लेता हो और या फिर यह प्राणी जीवित ही न हो!
TTIक
तड़ाऽऽ
और अगर दोनों में से एक भी बात सच है तो फिर मेरी सर्प शक्तियां इस पर ज्यादा असरदार साबित नहीं होंगी। इसको परास्त करने का सबसे अच्छा तरीका है... मेरी शारीरिक शक्ति।
नागराज, उस प्राणी पर लपका तो जरूर...
...लेकिन चीख उस प्राणी के मुंह से नहीं, बल्कि नागराज के मुंह से निकली-
धड़ाक
आह!
इसका शरीर तो पत्थर जैसा सख्त है।
अब मैं इस पर किस तरीके से वार करूं?...
...ऐसे तो यह कुछ ही वारों में मेरी खोपड़ी के दो टुकड़े कर देगा।
स्वांय

amaan cooldude18
अब मुझे उस शक्ति का प्रयोग करना पड़ेगा, जिसका प्रयोग मैं सिर्फ आपात काल में ही करता हूं। अपनी 'इच्छाधारी शक्ति' का।
नागराज के मानसिक संकल्प करते ही-
... उसका शरीर कणों में बदलने लगा। और वे कण, वायुमंडल में मौजूद कई प्रकार के अन्य कणों के साथ मिश्रित होने लगे-
और फिर कणों का यह मिश्रण एक निश्चित आकार लेने लगा-
वह आकार जो सिर्फ रूप और शरीर में ही नहीं, बल्कि बल में भी उस दुश्मन प्राणी की बराबरी का था-
नागराज बन चुका था... इच्छाधारी नागराज!

और अब मुकाबला दो बराबर शक्तियों के बीच में था-
दोनों के बीच में फर्क सिर्फ इतना ही था कि एक के पास जो दिमाग और दृढ़ संकल्प था...
... वह दूसरे के पास नहीं था-
कमाल है! मैं इसको जिस शक्ति से पटक रहा हूं, उससे तो इसका शरीर चूर-चूर हो जाना चाहिए। लेकिन इस पर तो कोई खास असर होता नहीं दिखता। यानी लड़ाई का स्टाइल बदलना पड़ेगा।
धड़ाककक
इसके शरीर से एक एक अंग को तोड़-तोड़ कर अलग करता हूं। शुरुआ इसके सिर के लहरा रहे 'तंतुओं' से करता हूं।
तड़ाक
नागराज ने एक तंतु तो उखाड़ लिया...

... मगर दूसरा तंतु उखाड़ते ही-
चटक्क
वह प्राणी एक हल्के से धमाके के साथ, धूल बनकर हवा में बिखर गया-
अरे! एकाएक यह क्या हुआ?
फटट
अब मुझे भी इच्छाधारी रूप में बने रहने की...
... कोई आवश्यकता नहीं है।
वायुमंडल से लिए गए कणों को वापस वायुमंडल में छोड़कर नागराज वापस आ गया-
अपने सामान्य रूप में-
कमाल है! जो प्राणी इतनी पिटाई के बाद भी टस से मस नहीं हुआ, वह तंतु के उखड़ते ही धूल में कैसे बदल गया?
लेकिन मुझे लगता है कि खतरा अभी टला नहीं है। क्योंकि यह प्राणी तो लुटेरा हो नहीं सकता। असली लुटेरा वह है, जिसने इस प्राणी को वैन लूटने भेजा था।
और उसने अगर एक हमला किया है तो असफल हो जाने पर दूसरा हमला भी जरूर करेगा। परन्तु वह लुटेरा है कहां? कहीं नजर क्यों नहीं आ रहा?
नागराज की चारों तरफ घूमती नजरें...

...कुछ भी ढूंढ़ नहीं पाई-
कौन है वह लुटेरा जो इस वैन का पैसा लूटना चाहता है? सामने क्यों नहीं आता कायर?
कायर..
..कायर..
..कायर..
कायर..
लेकिन नागराज के सवाल के जवाब में उसी की आवाज चट्टानों से टकराकर वापस आ गई-
कोई दिखाई नहीं दे रहा। खैर, जब तक उस दुश्मन के दिखने का इंतजार कर रहा हूं, तब तक वैन में फंसे इन बेहोश गार्डों को बाहर निकाल लूं...
जल्दी ही नागराज, दोनों गार्डों को पलटी हुई वैन से बाहर निकाल चुका था-
ये दोनों काफी घायल हैं। इनको जल्दी ही अस्पताल पहुंचाना होगा। लेकिन अगर मैं इनको अस्पताल ले जाऊंगा, तो वैन में रखे पैसे की हिफाजत कौन करेगा?
कुछ पहरेदार छोड़ कर जाता हूं।...
...अपनी सर्प सेना के कुछ चुनिन्दा सांपों को!
अपने घातक सर्पों को वैन में रखे पैसों और सोने की रखवाली के लिए छोड़कर...
...नागराज दोनों बेहोश गार्डों को लेकर अस्पताल की तरफ रवाना हो गया-
उम्मीद है कि मैं दस मिनट में वापस लौट आऊंगा।...
...और इतनी देर में वह
लुटेरा वैन पर हमला नहीं करे

लेकिन नागराज यह नहीं समझ रहा था कि उस अदृश्य लुटेरे का निशाना अब वैन में रखा पैसा नहीं...
...बल्कि खुद नागराज था-
?
आह! यह क्या?
अब वह लुटेरा, वैन को छोड़कर मुझ पर हमला कर रहा है।
खच
वह चमगादड़ जैसा प्राणी, नागराज पर एक बार फिर झपटा-
लेकिन नागराज की एक सटीक किक ने उसके शरीर की धूल बनाकर हवा में बिखेर दिया-
तड़ाक
लेकिन हमलों का दौर तो अभी शुरू हुआ था-
अरे! उधर हवा में धूल का एक बगूला कैसे बन रहा है?
वह बगूला एक आकृति धारण कर रहा है!

उस बगूले को आकृति लेने में ज्यादा वक्त नहीं लगा—
हे भगवान! ये तो 'मेंटिकोर' है। प्राचीन ग्रीक कथाओं का एक काल्पनिक प्राणी! लेकिन यह यहां पर कैसे आ गया?
गर्रर्रर्रर्रर्रर्रर्र

क्या किसी ने इसको भूतकाल से बुलाया है? मुझे खत्म करने के लिए? और या फिर ये वेन पर हमला करने वाले उस प्राणी की तरह है जो धूल बनकर हवा में बिखर गया था?... ... अभी चैक कर लेता हूं?
नागराज, मैंटिकोर की तरफ लपका-
और अपने पैर को लगभग तुड़वा ही बैठा-
आह!
ताड़,
इसका शरीर भी वेन पर हमला करने वाले प्राणी की तरह ही सख्त है!
और मैं शर्त लगाकर कह सकता हूं के इस पर भी मेरी सर्प शक्तियां कार साबित होंगी। इच्छाधारी शक्ति का एक बार फिर इस्तेमाल...
...आऊ!
मैंटिकोर का भारी-भरकम पंजा नागराज की खाल को छीलता चला गया-

amaan.cooldude18
और नागराज हवा में उड़ता हुआ जमीन पर आ गिरा-
ओह! यह 'मैंटिकोर' मेरी तरफ लपक रहा है। मेरे पास बच सकने का भी वक्त नहीं है। अब यह अपने पंजे के एक हीवार से मेरी खोपड़ी को कच्ची दीवार की तरह तोड़ देगा।...
घमम
अरे! मेरी तरफ लपकते-लपकते यह एकाएक रुक क्यों गया? खैर कुछ भी हो। इसकी इस हरकत ने मुझे बचने का वक्त दे दिया है!
इसको पहले कुछ पलों के लिए बेबस कर देता हूं।
और फिर इसके कोमल परों में अपना विषदंश गाड़ा देता हूं... शायद उससे यह प्राणी खत्म हो जाए।
नागराज के दांत, परों के अन्दर घुसने में कामयाब तो हो गए..
... लेकिन नागराज की योजना सफल नहीं हो सकी-
विषदंश का मैंटिकोर पर कोई भी असर नहीं हुआ-
ताड़
घड़ाााक

इस प्राणी 'मैंटिकोर' पर भी मेरी सर्प-शक्तियां बेअसर साबित होंगी। इसको भी अपनी उसी शक्ति से हराना होगा, जिससे मैंने पहले प्राणी को मात दी थी...
... एक बार फिर मुझे...
... बनना होगा...
... इच्छाधारी नागराज!...
... लेकिन... लेकिन यह क्या हो रहा है? मैं पूरी तरह से अपना इच्छाधारी रूप क्यों नहीं धर पाया? कहीं पर कुछ गड़बड़ हो रही है...
... पर अब कुछ भी हो...

... मुझे अपने इसी रूप की मदद से इस 'मैंटिकोर' को परास्त करना होगा।...
नागराज, मैंटिकोर पर टूट पड़ा-
लेकिन इच्छाधारी रूप धरने की प्रक्रिया में कुछ गड़बड़ हो जाने के कारण उसकी शक्ति मैंटिकोर के बराबर नहीं हो पाई थी-
आह! इससे काम नहीं चलेगा! मेरी शक्ति अभी मैंटिकोर से काफी कम है...
... मुझे अपने साम
रूप में आकर एक बा
इच्छाधारी रूप धरना
ताकि मेरी शक्तियां
बराबर की हो जा
तड़ाक
नागराज को विवश होकर अपने सामान्य रूप में आना पड़ा-
लेकिन इससे पहले कि वह इच्छाधारी रूप धारण करने की प्रकिया को एक बार फिर से शुरू कर पाता...
... एक खुशी से भरी किलकारी उसके कानों से आ टकराई-
हा हा हा! काम करती है! यह शक्ति तो काम करती है।
नागराज लगभग तुरन्त ही उस आवाज के स्त्रोत की त

और उसकी आंखें अचरज से गोल होती चली गईं-
हैलो नागराज!
अरे! सिर्फ आंखें और जबड़ा! हवा में तैरता हुआ! मुझसे बात कर रहा है! कैसे?
ये आंखें और जबड़ा भी तुम्हारी इच्छाधारी शक्ति की मेहरबानी से है नागराज! वर्ना इसके पहले तो मैं बिलकुल ही अदृश्य था। आर-पार दिखता था मेरे। इसीलिए मैंने अपना नाम ही रख लिया है... सी थ्रू। यानी आर-पार।
सी थ्रू!... अच्छा तो मिस्टर सी थ्रू, तुमने मेरा नाम कैसे जान लिया? मेरी इच्छाधारी शक्ति के बारे में कैसे पता किया? और... और मेरी इच्छाधारी शक्ति से तुम्हारी आंखें और जबड़ा किस तरह से उभर आए?
ओह! ओह! इतने सारे सवाल एक साथ? हम... जवाब देना कहां से शुरू करूं? खैर मैं तुमको शुरू से सुनाता हूं! शायद मेरी कहानी सुनकर तुम डर के मारे अपनी इच्छाधारी शक्ति मुझे दे दो...
... आज से सिर्फ दो महीने पहले तक मैं एक सामान्य वैज्ञानिक था। हर इंसान की तरह, हाड़-मांस का जीता-जागता पुतला। मैं बहुत प्रतिभाशाली वैज्ञानिक हूं। लेकिन अपने प्रयोगों को करने के लिए मेरे पास पैसा नहीं था...
... इसीलिए मैंने एक सरकारी नौकरी पकड़ ली। ताकि सरकार के पैसों से अपने प्रयोगों को कर सकूं। मैं 'टेलीपोर्टेशन' पर प्रयोग कर रहा था। 'टेलीपोर्टेशन' यानी 'पदार्थ' को कणों में बदलकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने की प्रक्रिया...
...कुछ-कुछ वैसी है, जैसा शायद तुमने 'स्टार ट्रेक' टी.वी सीरियल में देखा होगा।

यह बकवास बन्द करो, और मुझे मेरे सवालों का जवाब दो!

तुम्हारे ही सवालों के जवाब देने की शुरुआत कर रहा था।

सरकारी लेबोरेट्री में मैंने गुप्त रूप से प्रयोग क अपनी पर्सनल लैब में दो "टेलीपोर्टेशन चैम्ब बनाए। एक ट्रांसमीटिंग चैंबर यानी पदार्थ भेज वाला और दूसरा रिसीविंग चैंबर यानी पदार्थ ग्रह करने वाला। अब मैं एक ऐतिहासिक प्रयोग के लि तैयार
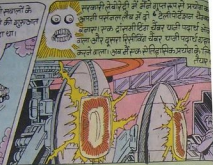
अपने चैंबरों की टेस्टिंग के लिए मैंने पहले लोहे के एक टुकड़े को ट्रांसमी चैंबर में रखा। वह टुकड़ा सफलतापूर्वक 'रिसीविंग चैंबर' में ट्रांसमिट हो ग

मेरे चैंबर सफलतापूर्वक काम कर रहे थे। अब मुझे इनकी टेस्टिंग किसी जीवित वस्तु पर करनी थी मैंने आस-पास देखा। कहीं पर एक तिलचट्टा या मक्खी तक भी नजर नहीं आ रही थी। मुझसे और सब्र नहीं हो सकता था। मैं खुद ही ट्रांस मीटिंग चैंबर में घुस गया। मशीन चालू हो गई-

मेरा शरीर कणों में बदल गया। और यहीं से सारी गड़बड़ शुरू हो गई-

मैंने सरकारी मशीनों पर जरूरत से ज्यादा भरोसा कर लिया था। 'टेलीपोर्टेशन सिस्टम' जीवित वस्तु को ट्रांसमिट करने का द सह नहीं पाया। उसने मुझे कणों में तो बदल दिया, पर मुझे ट्रां नहीं कर पाया। जोर पड़ने से सिस्टम भी शार्ट सर्किट होकर न हो गया। और साथ ही साथ मेरे शरीर से अलग हो गई मेरे शरी कणों को आपस में बांधकर रखने वाली अणु ऊर्जा-

और मैं हाड़ मांस के एक आदमी से बदलकर बन गया, कणों का में उड़ता हुआ एक समूह। मेरे सोचने-समझने की क्षमता तो बर थी। लेकिन मैं बन गया था सी थ्रू। आर-पार दिखने वाला इंसान-

इस बदले रूप से मुझे नुकसान तो हुआ ही हुआ, लेकिन फायदा भी हुआ। अब मैं अपने शरीर की खुली अणु ऊर्जा का इस्तेमाल वातावरण में तैर रहे धूल और गैसों के विभिन्न कणों को कोई भी मनचाहा रूप देने में कर सकता था-
और फिर इस प्रकार से निर्मित प्राणी को अपनी खुली मानसिक तरंगों के जरिए, एक जीवित प्राणी की तरह चला-फिरा सकता था। तुम अभी एक ऐसे ही प्राणी से टकरा चुके हो। साथ ही साथ मेरे अन्दर एक और क्षमता विकसित हो गई। मैं किसी के भी मस्तिष्क को थोड़ा-थोड़ा पढ़ सकता हूं। और चाहूं तो मस्तिष्क के किसी भी हिस्से को अपनी मानसिक तरंगों से चोट पहुंचा सकता हूं।
ओह! यानी मस्तिष्क पढ़ सकने की क्षमता के कारण ही तुम मेरा नाम और मेरी इच्छाधारी शक्ति के बारे में जान गए?
नहीं, नहीं, नागराज! तुम्हारा मस्तिष्क पढ़ने की कोशिश तो मैंने बाद में करी।
दरअसल मुझे अपने शरीर के कणों के अलग हो जाने का बहुत अफसोस था। मैं फिर से सामान्य आदमी बनना चाहता हूं। लेकिन इसके लिए मुझे पूरा 'टेलीपोर्टेशन सिस्टम' फिर से बनाना था।...

...और उसके लिए चाहिए था पैसा। इसीलिए मैंने इस वैन को लूटने की कोशिश की।
लेकिन तुमको कैसे पता चला कि उस वैन में पैसा है?
तुम लोगों की मूर्खता के कारण। अगर किसी वैन के साथ इतनी सिक्योरिटी हो तो जाहिर है कि वैन में कोई कीमती चीज ही होगी।
बस, मैंने एक प्राणी को वैन लूटने के लिए भेज दिया।
किन तुमने एक अजीबो-गरीब शक्ति का योग करके उस प्राणी जैसा रूप धरकर, मको खत्म कर दिया। उस वक्त मैंने तुम्हारे स्तिष्क को पढ़ने की कोशिश की और तब मुझे ता चला तुम्हारी इच्छाधारी शक्ति का।
ह शक्ति जिससे तुम्हारा शरीर कणों में दलकर, और फिर से जुड़कर नए रूप धारण सकता है। मैंने सोचा कि अगर अपनी अणु शक्ति ा तुम्हारी ये शक्ति खींच ली जाए तो ये शक्ति मेरे शरीर के कणों को भी जोड़ सकती है।
बस, मैंने मैंटिकोर को तुम्हारे पीछे भेज दिया। तुमने इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग किया। और जिस वक्त तुम्हारा शरीर कणों के रूप में था, उसी वक्त मैंने यह शक्ति थोड़ी सी खींच ली। उससे मेरी आंखों और जबड़े के कण फिर से जुड़ गए।

अब मैं तुमको फिर से बार-बार इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करने पर मजबूर करूंगा, और इस शक्ति को खींचकर अपने पूरे शरीर को जोड़ लूंगा।...
...और जब मेरे शरीर कण इच्छाधारी शक्ति से जुड़ेंगे, तो फिर मैं भी कोई रूप धर सकूंगा। सारी दुनिया मेरे इशारों पर नाचेगी।
चाहे तो अपने मैंटिकोर का इस्तेमाल करके भी देख ले।
उसकी अभी जरूरत नहीं है नागराज!
मैंने तुम्हारे मस्तिष्क में स्थित उस ग्रंथि को, विचार तरंगों द्वारा ढूंढ निकाला है। जो इच्छाधारी शक्ति को नियंत्रित करती है। अब मैं इस ग्रंथि को, अपनी अणु शक्ति के हमले से इतना खलबला दूंगा...
... कि यह ग्रंथि, अनियंत्रित होकर तुमको खुद-ब खुद इच्छाधारी रूप बदलते रहने पर मजबूर करती रहेगी।
आह!
अणु शक्ति की किरणों के सटीक वार, नागराज के मस्तिष्क में स्थित इच्छाधारी ग्रंथि से टकराए-

और इच्छाधारी ग्रंथि में एक तीव्र हलचल शुरू हो गई-
नागराज के मस्तिष्क में एक के बाद एक मानसिक चित्र उभरने लगे-
और नागराज का शरीर, उसी मानसिक चित्र की तरह अपने इच्छाधारी रूप को धरने लगा-
नागराज के हर बदलते हुए रूप के साथ-साथ...
... उसकी इच्छाधारी शक्ति का एक छोटा सा हिस्सा खिंचता चला जा रहा था-
और 'सी थ्रू' के शरीर के कण धीरे-धीरे जुड़ते जा रहे थे-

राज कॉमिक्स
ओह! यह अपनी मानसिक शक्ति द्वारा लगातार मेरी 'इच्छाधारी ग्रंथि' पर प्रहार करता जा रहा है, और मैं चाह कर भी अपने रूप बदलने को रोक नहीं पा रहा हूं।...
...सी थ्रू मेरी इच्छाधारी शक्ति को चुरा-चुराकर अपने शरीर के कणों को जोड़ रहा है। और अगर वह सफल हो गया तो पूरे संसार के लिए एक भयानक खतरा बन जाएगा।...
मुझे इसको रोकने का तरीका ढूंढ़ना होगा। और वह भी बहुत जल्दी।...
...पर वह तरीका क्या हो सकता...
...आ गया।
और उसके लिए सबसे पहले मुझे सी थ्रू से दूर भागना पड़ेगा। ताकि यह मेरे मस्तिष्क पर मानसिक तरंगों से वार न कर सके।...
...और भागूंगा भी मैं उस तरफ, जिस तरफ वह हथियार पड़ा है, जो मुझे इच्छाधारी रूप बदलने से रोक सकता है।
अच्छा तो नागराज भाग रहा है। भागेगा कहां मैंटिकोर, इसका पीछा करो!
नागराज बेकार ही में नहीं भाग रहा था। उसके दिमाग में एक योजना जन्म ले चुकी थी-
ये रही वह पलटी हुई वैन। यहीं पर कहीं आस-पास वह चीज होनी चाहिए जिसकी मुझे तलाश है।

नागराज को अपने मतलब की चीज ढूंढ़ने में ज्यादा वक्त नहीं लगा-
ये रही वह चीज, जिसकी मुझे तलाश थी। वैन का साइड व्यूमिरर यानी शीशा।
अब इसमें मैं अपनी आंखों में देखकर खुद को ही सम्मोहित कर सकता हूं।...
...अपने- आपको आदेश दे सकता हूं कि इच्छाधारी शक्ति के केन्द्र को बन्द कर दे।
नागराज की आईने से झांकती आंखें, नागराज की आंखों से टकराईं-
...उन आंखों से सम्मोहन की तीव्र लहरें निकलकर नागराज को खुदही सम्मोहित करने लगीं-
और नागराज की हवा में गूंजती आवाज, उसी को आदेश देने लगी-
अब से, यानी इसी क्षण से मैं अपनी इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग सिर्फ सर्प रूप के अलावा और कोई रूप धारण करने में नहीं कर सकूंगा...
...और इस आदेश को मैं खुद भी काट नहीं पाऊंगा, और न ही कोई और काट पाएगा क्योंकि इस राज को मैं किसी को भी किसी तरह से नहीं बता पाऊंगा!
मेरी इच्छाधारी शक्ति का केन्द्र अब अपने अंदर घुसने वाली किसी भी शक्ति का प्रतिरोध खुद करेगा।
यह आदेश हमेशा के लिए है।
अब मैंने अपने- आपको सिर्फ सर्प रूप धारण कर सकने के लिए आजाद रखा है। और वह भी सिर्फ इसलिए ताकि मैं नागद्वीप के अन्य सर्प मानवों के साथ जरूरत पड़ने पर सर्प रूप में रह सकूं...
सी थ्रू का वह तरीका, नागराज के ठीक पीछे पहुंच चुका था-
अब देखता हूं कि सी थ्रू मुझको इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करने पर किस तरह से मजबूर कर सकता है!

और नागराज को इच्छाधारी रूप में बदलने के लिए मजबूर करने की प्रक्रिया शुरू हो गई–
ओह! तो सी थ्रू ने मैंटिकोर को मुझ पर हमला करने के लिए भेज दिया है। अब मेरे सामने एक बहुत बड़ी समस्या खड़ी हो गई है। इसको बगैर इच्छाधारी रूप धरे खत्म नहीं किया जा सकता।...
तड़क
... और इच्छाधारी रूप मैं अब धारण नहीं कर सकता। इस तरह की बेमेल लड़ाई का तो एक ही नतीजा निकल सकता है... मेरी मौत!
इसको और मारो मैंटिकोर
... इसको इच्छाधारी रूप धरने पर मजबूर करो!
सी थ्रू को अब तक यह पता नहीं है कि मैं इच्छाधारी रूप धारण नहीं कर सकता! इसलिए यह मैंटिकोर से तब तक मुझ पर कोई घातक हमला नहीं कराएगा, जब तक मैं इच्छाधारी रूप नहीं धरता।
क्योंकि सी थ्रू का इरादा मुझे मारना नहीं, बल्कि मुझे इच्छाधारी रूप धरने पर मजबूर करना है!
और इससे मुझे यह सोचने का समय मिल जाएगा कि मैंटिकोर को कैसे खत्म किया जाए!
नागराज को तरीका सोचने में ज्यादा वक्त नहीं लगा–
यह मैंटिकोर धूल और कणों से बना प्राणी है। और जान है सी थ्रू की मानसिक अब इसकी जान निकालने एक ही तरीका है कि इसक थ्रू की मानसिक तरंगों से तोड़ दिया जाए...

वेन लूटने वाले जिस प्राणी से मैं लड़ा था, उसको मैंने उसके तन्तुओं को तोड़कर खत्म किया था। तन्तु के टूटते ही वह धूल बनकर हवा में बिखर गया था। वह तन्तु जरूर किसी किस्म का 'एंटीना' रहा होगा जो सी धू्र के मानसिक संकेतों को ग्रहण कर रहा था!
इस मैंटिकोर के माथे पर लगा 'सींग' भी उसी किस्म का एंटीना लग रहा है। अगर मैं इसको तोड़ दूं तो मैंटिकोर को भी धूल बनकर खत्म हो जाना चाहिए।
खैर! इस थ्योरी को तो अभी चेक कर लेता हूं।
नागराज की कलाई से अधिकतर चीजों को काट सकने वाले नागफनी सर्प निकलकर मैंटिकोर की तरफ लपके-
और मैंटिकोर के माथे पर उभरा सींग कटकर अलग हो गया-
खच
सींग के अलग होते ही नतीजा तुरन्त सामने आ गया-
नागराज का सोचना ठीक था। सींग के कटते ही मैंटिकोर का शरीर धूल में परिवर्तित हो गया-
ओह! तूने मैंटिकोर को बगैर इच्छाधारी रूप धरे नष्ट कर दिया। यानी तू जान गया है कि मेरे द्वारा बनाए गए धूल की जीवों में एक 'कांटैक्ट प्वांइट' होता है। जिसको नष्ट कर देने से मुझसे उनका मानसिक संपर्क टूट जाता है, और वे नष्ट हो जाते हैं!
इसलिए अब तुझ पर धूल के जीवों से हमला करवाने का कोई मतलब नहीं है।
मैं फिर से तेरी इच्छाधारी ग्रंथि पर हमला करता हूं।

सी थ्रू ने एक बार फिर अपनी मानसिक तरंगों द्वारा नागराज के मस्तिष्क में स्थित इच्छाधारी शक्ति की ग्रंथि पर हमला किया-
लेकिन इस बार इच्छाधारी ग्रंथि को किसी भी बाहरी शक्ति हमले से स्वयं बचाव करने के लिए नागराज का आदेश मिल
इच्छाधारी ग्रंथि ने, बाहरी हमले से बचाव के लिए एक शक्तिशाली अवरोध खड़ा कर दिया-
और सी थ्रू को अपनी ही मानसिक तरंगों का एक 'बैक शॉक' लगा-
हवा में उड़ता हुआ सी थ्रू न जाने कहां आकर गिरा, यह तुम खुद भी नहीं देख पाए। उसके बाद सी थ्रू का कुछ पता नहीं चला।
अच्छा, तो यह थी तुम्हारी इच्छा शक्ति की कहानी। शक्ति होते हु तुम उसका प्रयोग नहीं कर सक

कमाल की कहानी थी नागराज! सीथ्रू जैसा अद्भुत आदमी भी हो सकता है, ऐसा तो मैंने पहले कभी सोचा ही नहीं था। लेकिन इससे पहले यह कहानी किसी को पता क्यों नहीं चली?

मेरे अलावा किसी को भी यह कहानी पता नहीं थी डॉक्टर कार्तिक! और मैं किसी को यह कहानी बता नहीं सकता था। क्योंकि इस कहानी के साथ मेरी 'इच्छाधारी शक्ति' के गुम होने का भी जिक्र आता और मेरा 'हिप्टोनिक आर्डर' मुझे इसको बताने की इजाजत नहीं देता।

नागराज इस बात से अंजान था कि सीथ्रू उसका पीछा करता हुआ डॉक्टर कार्तिक की प्रयोगशाला तक पहुंच चुका था-

यह मैं क्या सुन रहा हूं? नागराज की इच्छाधारी शक्ति कहीं गुम हो गई है। यानी अब यह मेरे किसी काम का नहीं रहा।

अगर यह सच है तो उसे मात देने के लिए तुमको इच्छाधारी शक्ति की जरूरत पड़ सकती है नागराज!
कभी नहीं! मैं इच्छाधारी शक्ति के बगैर ही उसको मात दे दूंगा। वैसे भी इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग तो मैं कर ही नहीं सकता!
मेरी बात समझने की कोशिश करो नागराज! सी थ्रू इस बार पहले से ज्यादा शक्तिशाली होकर वापस आएगा।
वह इस बार किसी नई ट्रिक का इस्तेमाल करेगा। और हो सकता है इस बार तुम उन धूल-प्राणियों को खत्म करने का तरीका न सोच पाओ!
उसके प्राणी महानगर को तहस-नहस कर डालेंगे... उसको और उसके प्राणियों को सिर्फ एक ही चीज नष्ट कर सकती है। तुम्हारी इच्छाधारी शक्ति!
आपके तर्क में दम तो लगता है डॉक्टर! लेकिन मैं तो चाहकर भी इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता!
चिन्ता मत करो नागराज! मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। मैं तुम्हारे मस्तिष्क के इच्छाधारी हिस्से में एक ऐसा मानसिक अवरोध लगा दूंगा, जो किसी बाहरी मानसिक संकेत को रोक लेगा...
मैं अपनी मशीनों के जरिए तुम्हारे 'हिप्टोनिक आर्डर' की काट सकता हूं, नागराज! उसके बाद तुम इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करने के लिए आजाद होगे!
लेकिन अगर सी थ्रू ने मानसिक तरंगों द्वारा मेरी इच्छाधारी ग्रंथि पर हमला करके, फिर से मुझे बार-बार इच्छाधारी रूप धरने पर विवश कर दिया तो क्या होगा?
दूसरे शब्दों में कहा जाए तो तुम जब चाहोगे, इच्छाधारी रूप धारण कर सकोगे। लेकिन कोई दूसरा तुमको इच्छाधारी रूप धरने पर मजबूर नहीं कर सकेगा!
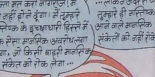
अगर ऐसा हो सकता है तो फिर इंतजार क्यों? चलिए मैं तैयार हूं।
ही ही ही! सारे काम अपने आप आसान होते जा रहे हैं। कोई देखे तो यही समझेगा कि ये डॉक्टर कार्तिक मेरे लिए काम कर रहा है।
नागराज के 'हिप्टोनिक ऑर्डर' को मिटाने का काम शुरू हो गया-
घाईईईईई
और कुछ ही सेकेंडों के बाद-
नागराज, अपने ही हिप्टोनिक कंट्रोल से आजाद था-
मुझे तो अपने अंदर कोई बदलाव महसूस नहीं हो रहा है, डॉक्टर कार्तिक! आपको पक्का यकीन है कि मेरा 'हिप्टोनिक-ऑर्डर' खत्म हो गया है?
बिल्कुल नागराज! चाहो तो तुम किसी भी इच्छाधारी रूप में बदलकर देख सकते हो!
अभी चेक करता हूं!
वैसे भी आप मुझे इच्छाधारी रूप में बदलते हुए देखना चाहते थे।
मैं आपको उसी मैंटिकोर के रूप में बदलकर दिखाता हूं। जिसकी कहानी मैं अभी आपको...
...ओह!
क्या हुआ नागराज?
फिर कुछ गड़बड़ हो रही है!
मेरी इच्छाधारी शक्ति खिंच रही है...
... मुझे वापस अपने सामान्य रूप में आना होगा!

नागराज बहुत जल्दी अपने सामान्य रूप में वापस आ गया-
मेरी इच्छाधारी शक्ति फिर से खिंचती सी महसूस हो रही थी- इसका एक ही अर्थ हो सकता है।... और वह ये...
... कि सी थ्रू वापस आ गया है!
तू एकदम ठीक सम नागराज! और इस डॉक्ट कार्तिक ने भी ठीक सम सी थ्रू इस बार पहले से ज्यादा शक्तिशाली हो वापस आया है।
अभी तो मैं कांच के पार से तेरी शक्ति खींचने की कोशिश कर रहा था।
इसीलिए मैं ज्य शक्ति खींच नहीं पा
जब लगभग छः महीने पहले मेरी तुमसे मुठभेड़ हुई थी, तब मैंने तुरंत-तुरंत अपने शरीर को खोया था। इसीलिए मैं खुद अपनी शक्तियों के बारे में ज्यादा जान नहीं पाया था। लेकिन मैं इन छः महीनों में अपनी शक्तियों के बारे में भी अच्छी तरह जान गया हूं और उनके इस्तेमाल के बारे में भी!

अब तेरे सामने दो ही रास्ते हैं। या तो इच्छाधारी शक्ति को लिए-लिए मर जा। और या फिर इच्छाधारी शक्ति मुझे चुपचाप दे दे। तब मैं शायद इनाम में तेरी जान बख्श दूंगा!
तुझे जो भी रास्ता पसन्द हो चुन ले। क्योंकि दोनों ही सी थ्रू इस दुनिया पर राज क
तू मेरे हाथों पिटने के अलावा और कुछ नहीं करेगा सी थ्रू! वैसे अगर तू चुपचाप अपने आपको मेरे हवाले कर दे, तो मैं तेरे शरीर को वापस लाने के किसी उपाय के बारे में सोच सकता हूं।

वैसे भी अगर तू मुझे जल्दी भी मिल जाता, तो भी कुछ फायदा नहीं होता। क्योंकि तब मैं तेरी इच्छाधारी ऊर्जा को चुरा नहीं पाता। अब डॉक्टर कार्तिक ने मेरा काम आसान कर दिया है!

बस! बहुत बातें। अब तू सी थ्रू की शक्ति तो मैं अपनी से सिर्फ कणों जोड़ पाता था-

...लेकिन अब मैं बड़े-बड़े टुकड़ों को भी अपनी अणु शक्ति का इस्तेमाल करके जोड़ सकता हूं।... ...ले देख!
कड़ड़ड़ ड़...च
अरे! अरे! यह क्या?
यह तो मेरी लैब को तोड़-फोड़ डाल रहा है!
ती थ्रू की अणु शक्ति ने पहले तो डॉक्टर कार्तिक की लैब को तोड़ा-
और फिर-टूटे पुर्जों को एक नए और खतरनाक रूप में जोड़ने लगा-
ये है मेरा नवीनतम निर्माण नागराज! मैंने अभी-अभी इसका नामकरण भी कर दिया है।... डायनो-स्पाइडर!
मशीनी पुर्जों और धूल एवं गैस कणों का बना एक खतरनाक प्राणी है।...
...अब या तो तू इच्छाधारी शक्ति के इस्तेमाल से इसको मारेगा या खुद इसके हाथ से मरेगा!
दोनों में से कुछ भी नहीं होगा सीथ्रू!...

...क्योंकि मैं इसको बगैर इच्छाधारी रूप धरे ही खत्म कर दूंगा।
तुम शायद ये भूल रहे हो कि मैं यह रहस्य जानता हूं कि तुम इन प्राणियों को अपनी मानसिक-तरंगों से चलाते हो...
टक
और अगर इन प्राणियों और तुम्हारी मानसिक तरं का 'कांटैक्ट प्वाइंट' नष्ट क दिया जाए, तो ये प्राणी जीवित नहीं रह सकते।
तुम्हारे 'डायनो स्पाइड के सिर में लगी सींग ही 'कांटैक्ट प्वाइंट' लगते हैं इनको नष्ट करने से ए भी नष्ट हो जाने चाहिए

लेकिन नागराज की यह उम्मीद गलत साबित हुई--
यह भी कोशिश करके देख ले नागराज! तू क्या मुझे मूर्ख समझता है। मेरे द्वारा पहले बनाए गए प्राणियों में सिर्फ एक-एक ही 'कांटैक्ट प्वाइंट' था।...
...लेकिन इस प्राणी में मैंने पूरे एक दर्जन 'कांटैक्ट प्वाइंट' दिए हैं। और जब तक तू इन सारे 'कांटैक्ट प्वाइंटों' को ढूंढ़ पाएगा...
आह! इस पर तो सींग के टूटने का कोई असर नहीं हुआ। शायद दूसरे सींग को तोड़ने से काम बने।
...तब तक 'डायनी-स्पाइडर' तेरे शरीर से तेरी जान निकालने का रास्ता बना देगा, नागराज!
ब भी वक्त है! इच्छाधारी रूप में लकर अपनी जान बचा ले नागराज!
कमीनही!

मेरे इच्छाधारी रूप में बदलते ही तू 'इच्छाधारी ऊर्जा' को चुराने की कोशिश करेगा, सी थ्रू! तू ऐसे ही दुनिया के लिए बड़ा खतरा है!...
...इच्छाधारी बन कर तू एक बहुत बड़ा खतरा बन जाएगा...
...मेरी जान जा या रहे, मैं तुझे इच्छा शक्ति नहीं चुराने दूंगा
नागराज की गर्दन पर धीरे-धीरे शिकंजा कसने लगा-
सांस रुकने लगी! आंखें बाहर उबलने लगीं! जीभ बाहर लटकने को बेताब होने लगी-
हायनो-स्पाइडर ने अपने-आप ही शिकंजा ढीला कर दिया-
तुम्हें मारना मेरा मकसद नहीं है नागराज! मुझे तो तुम्हें इच्छाधारी रूप में बदलवाना है!...
...तू अपनी जान बचाने के लिए तो इच्छाधारी कभी नहीं बनेगा...
लेकिन इससे पहले कि नागराज अपने बचाव में कोई दांव चलाता-

...लेकिन सुना है तुझे दूसरे लोगों की जान से बहुत प्यार है...
...देखते हैं तू दूसरों की जान बचाने के लिए इच्छाधारी बनता है या नहीं।...
...डायनो स्पाइडर, मूव!
आदेश मिलते ही डायनो-स्पाइडर, दीवार तोड़ता हुआ क्लीनिक से बाहर निकल गया-
और बाहर अपने-अपने कामों पर जा रहे लोगों के बीच में भगदड़ मच गई-
धड़ाक
ओह! डायनो-स्पाइडर लोगों पर हमला कर रहा है। जब तक मैं इसको खत्म करने का तरीका ढूंढ़ पाऊंगा तब तक ये न जाने कितने बेगुनाहों की जान ले लेगा।
अब मुझको वही रास्ता अपनाना पड़ेगा, जो मी थ्रू चाहता है और मैं बिलकुल नहीं चाहता। और वह रास्ता है...

नागराज, पलक झपकते ही एक अद्भुत इच्छाधारी रूप में परिवर्तित हो
छः भुजा
विशालकाय
के रूप में
... इच्छाधारी रूप धारण करने का!
ऐसा इच्छाधारी रूप, जो एक साथ 'हायलो-स्पाइक्स' के सारे 'कांटेक्ट प्वाइंट्स' पर प्रहार कर सकता है! अपनी कई भुजाओं की मदद से!
ओफ़! ये नागराज तो बहुत जल्दी इच्छाधारी रूप में बदल गया। मैं इसके लिए तैयार नहीं था!

खैर! ये इच्छाधारी रूप से बदल कर सामान्य रूप में तो आएगा ही... तब मैं इसकी इच्छाधारी-ऊर्जा खींचने के लिए तैयार रहूंगा...
...अभी तो बिना टिकट का तमाशा देखा जाए। क्योंकि नागराज और 'डायनो-स्पाइडर' के बीच में एक रोमांचक मुठभेड़ होने वाली है।
तड़
कड़
नागराज और 'डायनो-स्पाइडर' के बीच की मुठभेड़ रोमांचक तो जरूर थी, लेकिन संक्षिप्त भी थी-
धम्म
तड़ाक
क्योंकि नागराज की छः विशालकाय भुजाओं के भीषण वार, डायनो-स्पाइडर के शरीर को हर जगह पर पीट रहे थे-
और इन वारों के साथ-साथ-
उसके शरीर में बने दर्जन भर 'कॉंटेक्ट प्वाइंट' एक-एक करके नष्ट हो रहे थे-
और आखिरी कॉंटेक्ट प्वाइंट के नष्ट होते ही डायनो-स्पाइडर का शरीर भी वापस मशीनी पुर्जों और धूल के गुबार में परिवर्तित हो गया-

नागराज के इच्छाधारी रूप का कार्य समाप्त हो गया था-
और इस खेल का सबसे खतरनाक हिस्सा यहीं से शुरू होने वाला था-
क्योंकि अब नागराज को सामान्य रूप में कभी न कभी आना ही था। और उसकी एक-एक हरकत पर नजर गड़ाए हुए था, सी थ्रू-
यह मेरी इच्छाधारी शक्ति को खींचने के लिए तैयार खड़ा है। और इस विशाल काय रूप में मैं इससे छुप नहीं सकता... सिर्फ एक ही काम किया जा सकता है...
... और वह ये कि मैं फिर से इतनी तेजी से वापस सामान्य रूप में आ जाऊं कि सी थ्रू मुझे 'कणों' वाली हालत में न पकड़ सके।
नागराज का इच्छाधारी शरीर बहुत तेजी से सामान्य रूप में आने के लिए कणों में परिवर्तित हुआ-
लेकिन उसकी यह चाल इस बार सफल न हो सकी-
सी थ्रू ने ऐन वक्त पर इच्छाधारी ऊर्जा को खींचना शुरू कर दिया-
आह! मेरी इच्छाधारी शक्ति खिंच रही है। और मैं इसे रोक नहीं पा रहा हूं।
लेकिन मैं आखिरी दम तक सी थ्रू का मुकाबला करूंगा...
लेकिन नागराज का मुकाबला किसी काम नहीं आया-
ऊर्जा का बहाव हमेशा ज्यादा से कम की तरफ होता है। और सी थ्रू के पास इस वक्त कम ऊर्जा थी-
ऊर्जा का बहाव जारी रहा। और सी थ्रू के शरीर के कण धीरे-धीरे जुड़ने लगे-
ओऽऽऽह! यह क्या हो रहा है? इच्छाधारी ऊर्जा के साथ-साथ, मेरे सामान्य शरीर के कणों को बांधे रखने वाली ऊर्जा भी सी थ्रू की तरफ खिंच रही है।...
... अब मैं कुछ नहीं कर सकता। मुझे इच्छाधारी ऊर्जा को पूरी तरह से छोड़ना होगा

... वर्ना मेरे शरीर की अणु ऊर्जा भी इच्छाधारी शक्ति के साथ-साथ ही खिंच जाएगी और फिर 'मैं' सी थ्रू बन जाऊंगा...
नागराज ने सामान्य रूप में वापस आने के लिए अपनी इच्छाधारी शक्ति को पूरी तरह से छोड़ दिया-
इच्छाधारी ऊर्जा वातावरण में चारों तरफ बिखर गई-
और सी थ्रू के शरीर के कण...
... बहुत तेजी से आपस में जुड़ने लगे-
कुछ ही पलों में सी थ्रू के शरीर के सारे कण जुड़ चुके थे-
हाहा हा! मिशन सफलतापूर्वक पूरा हुआ! इच्छाधारी शक्ति ने मेरे शरीर को फिर से सामान्य रूप का बना दिया है।
लेकिन मैं अभी और इच्छाधारी शक्ति को खींचूंगा। एक भी कतरा नहीं छोड़ूंगा। क्योंकि यही रूप बदल सकने की शक्ति मुझसे दुनिया पर राज कराएगी।
अपनी सफलता के नशे में चूर सी थ्रू, इच्छाधारी शक्ति को सोखता चला गया। तब तक, जब तक उसको अपनी गलती का अहसास नहीं हुआ-
य... यह क्या हो रहा है? मेरा... मेरा पूरा शरीर कंपकंपा क्यों रहा है?
मुझे अन्दर से दबाव सा पड़ता महसूस हो रहा है। एक तेज दबाव!

सी थ्रू के कुछ समझ पाने से पहले ही-
बहुत तेज असहनीय दबाव!
उसका नया-नया जुड़ा शरीर एक धमाके के साथ फट पड़ा। और साथ ही साथ, हवा में गुम हो गई इच्छाधारी ऊर्जा-
भड़ाऽऽऽऽऽऽक्क
यह क्या हुआ, नागराज? इसका शरीर बनने के बाद फट कैसे गया?
लालच की वजह से डॉक्टर कार्तिक। इसने अपनी जरूरत से कहीं ज्यादा इच्छाधारी ऊर्जा सोखने की कोशिश की थी।
लेकिन इसका शरीर इस लायक नहीं था कि इतनी ऊर्जा को अपने अंदर समेटकर रख पाता।
इसीलिए उस ऊर्जा ने इसके शरीर को ही फाड़ डाला...
ओह! जैसे 220 वोल्ट के बल्ब में अगर 440 वोल्ट का करेंट दौड़ा दिया जाए तो वह फ्यूज हो जाता है। लेकिन इस चक्कर में तुम्हारी इच्छाधारी शक्ति भी शायद गुम हो गई है। और वह भी मेरी गलती से।
मेरी इच्छाधारी शक्ति पूरी तरह से गुम नहीं हुई है डॉक्टर! जब मैं अपनी अणु शक्ति को वापस खींच रहा था, तब उसके साथ थोड़ी सी ऊर्जा भी खिंच आई थी...
... अभी भी मेरे पास इतनी इच्छाधारी शक्ति बची है, जो मेरे सिर की रक्षा कर सके, और मुझे नागरूप में बदलवा सके।... और जो इच्छाधारी शक्ति वातावरण में गुम हो गई है...
... उसका पता भी एक न एक दिन मैं जरूर लगा लूंगा!
समाप्त.